>

Title : Need to provide basic civic amenities including potable water so as to achieve Millennium Development Goal by 2015.

DR. KIRIT PREMJIBHAI SOLANKI (AHMEDABAD WEST): Thank you, Madam, for giving me this opportunity to raise a very important issue.

भारत में शौचालयों की संख्या से ज्यादा संख्या मोबाइल फोन की है। संयुक्त राष्ट्र की ओर से जारी एक चौंकाने वाली रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में जहाँ 50 करोड़ से अधिक लोग मोबाइल्स का इस्तेमाल कर रहे हैं, वहाँ शौचालयों की संख्या इसके मुकाबले काफी कम है। दुनिया के दूसरी सबसे ज्यादा आबादी वाले देश में साफ-सफाई की स्थिति से संबंधित ये आँकड़े बहुत निराशाजनक हैं। यह दुखद विडम्बना है कि भारत में इतनी संपन्नता है कि लगभग आधी आबादी मोबाइल फोन का इस्तेमाल कर रही है जबकि बड़ी संख्या में लोग शौचालय जैसी बुनियादी सुविधाओं से भी वंचित हैं।

19.39 hrs.

(Dr. Raghuwansh Prasad Singh *in the Chair*)

संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के मुताबिक हमारे देश में वर्तमान में करीब 45 फीसदी लोग मोबाइल फोन का इस्तेमाल कर रहे हैं जबकि 2008 में आबादी की महज़ 31 फीसदी हिस्सों की पहुँच शौचालयों तक है। यह रिपोर्ट उन विशेषज्ञों द्वारा बनाई गई है जिनको 2015 तक सफाई संबंधी मिलेनियम डैवलपमैंट गोल हासिल करने की योजना तैयार करने की जिम्मेदारी दी गई थी। एमडीजी के तहत दुनिया की अधिकांश आबादी को साफ पानी और शौचालय जैसी मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराने की बात की गई है। उल्लेखनीय है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन और यूनिसैफ के गत मार्च में जारी प्रोग्रैस ऑन सैनिटेशन एंड ड्रिंकिंग वाटर शीर्षक वाली रिपोर्ट में कहा गया है कि अगर मौजूदा गति से यह काम होता रहा तो 2015 तक एक अरब लोगों को शौचालय जैसी बुनियादी सुविधाएँ मुहैया कराने का लक्ष्य हासिल नहीं किया जा सकेगा। मेरा आपके माध्यम से सरकार से निवेदन है कि शौचालय जैसी बुनियादी सुविधा ज्यादा से ज्यादा आबादी को उपलब्ध करानी चाहिए।